

Class - B.A. Part - I

Sub - Hindi (Elective) 100 (com)

By Ravshan Ram

① पारिभाषिक शब्दावली का क्या अर्थ है?  
इसके निर्माण के लिए आवश्यक बातों का  
उल्लेख करें?

उत्तर - ज्ञान की विशेष शाखा से संबंध रखने  
वाली विशिष्ट शब्दावली 'पारिभाषिक शब्दा-  
वली' कहलाती है। विद्वानों द्वारा पारि-  
भाषिक शब्दावली को अनेक प्रकार से  
परिभाषित किया गया है।

डा० गोपाल शर्मा के अनुसार 'पारि-  
भाषिक शब्द वह हैं जो किसी ज्ञान विशेष  
के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त  
हों और जिसका अर्थ एक परिभाषा द्वारा  
स्थिर किया गया हो।

डा० मोलानाथ तिवारी के अनुसार पारि-  
भाषिक शब्द ऐसे शब्दों को कहते हैं  
जो रसायन, भौतिकी, दर्शन, राजनीति आदि  
विभिन्न विज्ञानों या शास्त्रों के शब्द होते  
हैं तथा जो अपने-अपने क्षेत्र में विशिष्ट  
अर्थ में परिभाषित होते हैं।  
निर्माण प्रक्रिया

नयी-नयी अवधारणाओं एवं संकल्पों हेतु  
पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण का कार्य  
भाषा के आधुनिकीकरण की सहाय प्रक्रिया  
है। ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न शाखाओं में  
तथ्यों के विवेचन-विश्लेषण और नयी उप-  
लब्धियों की अभिव्यक्ति हेतु नई शब्दा-  
वली का निर्माण कार्य भी सतत चलते  
रहने वाली प्रक्रिया है।



सामान्यतः पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के लिए चार पद्धतियां अपनाई जाती हैं जिन्हें 1 निर्माण 2 ग्राहण 3 संचयन 4 अनुकूलन कहा जाता है।

**निर्माण** - शब्द निर्माण की नियत प्रक्रिया के सहारे नये शब्दों की रचना करना (निर्माण) प्रक्रिया कहलाती है। इस संदर्भ में हमारी तीन मूल समस्याएँ हैं - (i) हमारी स्त्रोत भाषा कौन सी है? (ii) स्त्रोत भाषा के प्रत्यय आदि तथा अन्य शब्दों का प्रयोग कैसे करे? (iii) किन शब्दों का निर्माण करें?

**ग्राहण** - विदेशी भाषाओं से शब्द ग्राहण की दिशा में पहला प्रश्न क्यों और कैसे उठा उठता है। दूसरा यह कि किन शब्दों को ग्राहण किया जाय? तर्क यह कि दिया जावे हो कि शब्द निर्माण की क्षमता के बावजूद आंतराष्ट्रीय संपर्क को बनाए रखने के लिए अंग्रेजी आदि भाषाओं से शब्द ग्राहण किए जाने चाहिये।

**संचयन** - अपनी भाषा में से प्रचलित शब्दों में से उपयुक्त शब्दों को पारिभाषिक शब्दों के रूप में अपनाकर उसके चयन उपयोग की प्रक्रिया को संचयन कहते हैं।

**अनुकूलन** - अन्य भाषाओं से ग्राहण किए गये शब्दों को अपनी भाषा की प्रकृति के अनुकूल बना लेना 'अनुकूलन' कहा जाता है। अनुकूलन दो प्रकार से होता है, एक विदेशी ध्वनि को अपनी भाषा की ध्वनि का रूप देना। दूसरी विधि शब्दानुकूलन की होती है जिसमें दो भाषाओं का समासीकरण होता है।